2 Thessalonians

1 Greetings from Paul, Silas, and Timothy.
To the church of those in Thessalonica, who
are in God our Father and the Lord Jesus Christ.
2 Grace and peace to you from God the Father
and the Lord Jesus Christ.

3 We thank God for you always. And that's
what we should do, because you give us good
reason to be thankful: Your faith is growing more
and more. And the love that every one of you has
for each other is also growing. 4 So we tell the
other churches of God how proud we are of you.
We tell them how you patiently continue to be
strong and have faith, even though you are being
persecuted and are suffering many troubles.

Paul Tells About God's Judgment

5 This is proof that God is right in his judgment.
He wants you to be worthy of his kingdom. Your
suffering is for that kingdom. 6 God will do what
is right. He will punish those who are causing
you trouble. 7 And he will bring relief to you
who are troubled. He will bring it to you and to
us when the Lord Jesus comes from heaven for
all to see, together with his powerful angels.
8 He will come with burning fire to punish those
who don't know God—those who refuse to accept
the Good News about our Lord Jesus Christ.
9 They will be punished with a destruction that
never ends. They will not be allowed to be with
the Lord but will be kept away from his great
power. 10 This will happen on the day when the
Lord Jesus comes to receive honor with his holy
people. He will be admired among all who have
believed. And this includes you because you
believed what we told you.

11 That is why we always pray for you. We ask
our God to help you live the good way he wanted
when he chose you. The goodness you have
makes you want to do good. And the faith you
have makes you work. We pray that with his

2 थिस्सलुनीकियों

1 पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर
से हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह में स्थित थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के
नाम:

2 तुम्हें परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की
ओर से अनुग्रह तथा शांति प्राप्त हो।

3 हे भाईयों, तुम्हारे लिए हमें सदा परमेश्वर का
धन्यवाद करना चाहिए, ऐसा करना उचित भी है।
क्योंकि तुम्हारे विश्वास का आश्चर्यजनक रूप से
विकास हो रहा है तथा तुममें आपसी प्रेम भी बढ़
रहा है। 4 इसलिए परमेश्वर की कलीसियाओं में
हम स्वयं तुम पर गर्व करते हैं। तुम्हारी यातनाओं
के बीच तथा कष्टों को सहते हुए धैर्यपूर्वक सहन
करना तुम्हारे विश्वास को प्रकट करता है।

पौलुस का धन्यवाद तथा परमेश्वर के न्याय की चर्चा

5 यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि परमेश्वर का
न्याय सच्चा है। उसका उद्देश्य यही है कि तुम परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करने योग्य ठहरो। तुम अब उसी के
लिए तो कष्ट उठा रहे हो। 6 निश्चय ही परमेश्वर की
दृष्टि में यह न्यायोचित है कि तुम्हें जो दुख दे रहे हैं,
उन्हें बदले में दुख ही दिया जाए। 7 और तुम जो कष्ट
उठा रहे हो, उन्हें हमारे साथ उस समय विश्राम दिया
जाए जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान दूतों के साथ
स्वर्ग से 8 धधक्ती आग में प्रकट हो। और जो परमेश्वर
को नहीं जानते तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार
पर नहीं चलते, उन्हें दण्ड दिया जाएगा। 9 उन्हें अनन्त
विनाश का दण्ड दिया जाएगा। तथा उन्हें प्रभु और
उसकी महिमापूर्ण शक्ति के सामने से हटा दिया जाएगा।
10 ऐसा तब होगा जब वह अपने पवित्र जनों के बीच
महिमा मण्डित तथा सभी विश्वासियों के लिए आश्चर्य
का हेतु बनने के लिए आएगा उसमें तुम लोग भी
शामिल होवोगे क्योंकि हमने उसके विषय में जो साक्षी
दी थी, उस पर तुमने विश्वास किया था।

11 इसलिए हम तुम्हारे हेतु परमेश्वर से सदा
प्रार्थना करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें उस
जीवन के योग्य समझे जिसे जीने के लिए तुम्हें
बुलाया गया है। और वह तुम्हारी हर उत्तम इच्छा
को प्रबल रूप से परिपूर्ण करे और हर उस काम

power God will help you do these things more and more. 12 Then the name of our Lord Jesus will be honored because of you, and you will be honored because of him. This can happen only by the grace of our God and the Lord Jesus Christ.

Evil Things Will Happen

2 Brothers and sisters, we have something to say about the coming of our Lord Jesus Christ. We want to talk to you about that time when we will meet together with him. 2 Don't let yourselves be easily upset or worried if you hear that the day of the Lord has already come. Someone might say that this idea came from us—in something the Spirit told us, or in something we said, or in a letter we wrote. 3 Don't be fooled by anything they might say. That day of the Lord will not come until the turning away from God happens. And that day will not come until the Man of Evil appears, the one who belongs to hell. 4 He will stand against and put himself above everything that people worship or think is worthy of worship. He will even go into God's Temple and sit there, claiming that he is God.

5 I told you before that all these things would happen. Remember? 6 And you know what is stopping that Man of Evil now. He is being stopped now so that he will appear at the right time. 7 The secret power of evil is already working in the world now. But there is one who is stopping that secret power of evil. And he will continue to stop it until he is taken out of the way. 8 Then that Man of Evil will appear. But the Lord Jesus will kill him with the breath that comes from his mouth. The Lord will come in a way that everyone will see, and that will be the end of the Man of Evil.

9 When that Man of Evil comes, it will be the work of Satan. He will come with great power, and he will do all kinds of false miracles, signs, and wonders. 10 The Man of Evil will use every kind of evil to fool those who are lost. They are lost because they refused to love the truth and be

को वह सफल बनाए जो तुम्हारे विश्वास का परिणाम है। 12इस प्रकार हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम्हारे द्वारा आदर पाएगा। और तुम उसके द्वारा आदर पाओगे। यह सब कुछ हमारे परमेश्वर के और यीशु मसीह के अनुग्रह से होगा।

प्रभु के आने से पूर्व दुर्घटनाएँ घटेंगी

2 हे भाईयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के फिर से आने और उसके साथ परस्पर एकत्र होने के विषय में निवेदन करते हैं 2कि तुम अचानक अपने विवेक को किसी भविष्यवाणी किसी उपदेश अथवा किसी ऐसे पत्र से मत खोना जिसे हमारे द्वारा लिखा गया समझा जाता हो और तथाकथित रूप से जिसमें बताया गया हो कि प्रभु का दिन आ चुका है, तुम अपने मन में डावाँडोल मत होना। 3तुम अपने आपको किसी के भी द्वारा किसी भी प्रकार छला मत जाने दो। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि वह दिन उस समय तक नहीं आएगा जब तक कि परमेश्वर से मुँह मोड़ लेने का समय नहीं आ जाता और व्यवस्थाहीनता का व्यक्ति प्रकट नहीं हो जाता। उस व्यक्ति की नियति तो विनाश है। 4वह अपने को हर वस्तु के ऊपर कहेगा और उनका विरोध करेगा। ऐसी वस्तुओं का जो परमेश्वर की है या जो पूजनीय हैं। यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में जा कर सिंहासन पर बैठ यह दावा करेगा कि वही परमेश्वर है।

5क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब मैं तुम्हारे साथ ही था तो तुम्हें यह सब बताया गया था। 6और तुम तो अब यह जानते ही हो कि उसे क्या रोके हुए हैं ताकि वह उचित अवसर आने पर ही प्रकट हो। 7मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि व्यवस्थाहीनता की रहस्यमयी शक्ति अभी भी अपना काम कर रही है। अब कोई इसे रोक रहा है और वह तब तक इसे रोकता रहेगा, जब तक, उसे रोके रखने वाले को रास्ते से हटा नहीं दिया जाएगा। 8तब ही वह व्यवस्थाहीन प्रकट होगा। जब प्रभु यीशु अपनी महिमा में फिर प्रकट होगा वह इसे मार डालेगा तथा अपने पुनः आगमन के अवसर पर अपनी उपस्थिति से उसे नष्ट कर देगा।

9उस व्यवस्थाहीन का आना शैतान की शक्ति से होगा तथा वह बहुत बड़ी शक्ति, झूठे चिन्हों और आश्चर्यकर्मों 10तथा हर प्रकार के पापपूर्ण छल-प्रपंच से भरा होगा। वह इनका उपयोग उन व्यक्तियों के विरुद्ध करेगा जो सर्वनाश के मार्ग में खोए हुए हैं। वे भटक गए हैं क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम

saved. 11 So God will send them something
powerful that leads them away from the
truth and causes them to believe a lie. 12 They
will all be condemned because they did not
believe the truth and because they enjoyed doing
evil.

You Are Chosen for Salvation

13 Brothers and sisters, you are people the
Lord loves. And we always thank God for you.
That's what we should do, because God chose
you to be some of the first people* to be saved.
You are saved by the Spirit making you holy and
by your faith in the truth. 14 God chose you to
have that salvation. He chose you by using the
Good News that we told you. You were chosen so
that you can share in the glory of our Lord Jesus
Christ. 15 So, brothers and sisters, stand strong
and continue to believe the teachings we gave
you when we were there and by letter.

16-17 We pray that the Lord Jesus Christ
himself and God our Father will comfort you and
strengthen you in every good thing you do and
say. God loved us and gave us through his grace
a wonderful hope and comfort that has no end.

Pray for Us

3 And now, brothers and sisters, pray for us.
Pray that the Lord's teaching will continue to
spread quickly. And pray that people will give
honor to that teaching, the same as happened
with you. 2 And pray that we will be protected
from crooked and evil people. Not everyone
believes in the Lord, you know.

3 But the Lord is faithful. He will give you
strength and protect you from the Evil One. 4 The
Lord gives us confidence that you are doing what
we told you and that you will continue to do it.
5 We pray that the Lord will cause you to feel
God's love and remember Christ's patient
endurance.

नहीं किया है; कहीं उनका उद्धार न हो जाए। 11इसलिए
परमेश्वर उनमें एक छली शक्ति को कार्यरत कर देगा
जिससे वे झूठ में विश्वास करने लगे थे। इससे उनका
विश्वास जो झूठा है, उस पर होगा। 12इससे वे सभी
जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया और झूठ में
आनन्द लेते रहे, दण्ड पायेंगे।

तुम्हें छुटकारे के लिए चुना गया है

13प्रभु में प्रिय भाईयों, तुम्हारे लिए हमें सदा परमेश्वर
का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा के
द्वारा तुम्हें पवित्र करके और सत्य में तुम्हारे विश्वास के
कारण उद्धार पाने के लिए तुम्हें चुना है। जिन व्यक्तियों
का उद्धार होना है, तुम उस पहली फसल* के एक हिस्से
हो। 14और इसी उद्धार के लिए जिस सुसमाचार का
हमने तुम्हें उपदेश दिया है उसके द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें
बुलाया ताकि तुम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की
महिमा को धारण कर सको। 15इसलिए भाईयो, अटल
बने रहो तथा जो उपदेश तुम्हें मौखिक रूप से या
हमारे पत्रों के द्वारा दिया गया है, उसे थामे रखो।

16-17अब हमारा प्रभु स्वयं यीशु मसीह और हमारा
परम पिता परमेश्वर जिसने हम पर अपना प्रेम दर्शाया
है और हमें परम आनन्द प्रदान किया है तथा जिसने
हमें अपने अनुग्रह में सुदृढ़ आशा प्रदान की है। तुम्हारे
हृदयों को आनन्द दे और हर अच्छी बात में जिसे तुम
कहते हो या करते हो, तुम्हें सुदृढ़ बनाये।

हमारे लिए प्रार्थना करो

3 हे भाईयों, तुम्हें कुछ और बातें हमें बतानी
हैं। हमारे लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का संदेश
तीव्रता से फैले और महिमा पाए। जैसा कि तुम
लोगों के बीच हुआ है। 2प्रार्थना करो कि हम
भटके हुओं और दुष्ट मनुष्यों से दूर रहें। (क्योंकि
सभी लोगों का तो प्रभु में विश्वास नहीं होता।)

3किन्तु प्रभु तो विश्वासपूर्ण है। वह तुम्हारी
शक्ति बढ़ाएगा और तुम्हें उस दुष्ट से बचाए रखेगा।
4हमें प्रभु में तुम्हारी स्थिति के विषय में विश्वास है।
और हमें पूरा निश्चय है कि हमने तुम्हें जो कुछ
करने को कहा है, तुम वैसे ही कर रहे हो और
करते रहोगे। 5प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर के प्रेम
और मसीह की धैर्यपूर्ण दृढ़ता की ओर अग्रसर
करे।

2:13 ***to be ... people*** Some Greek copies say, "from the beginning."

2:13 उस ... फसल कुछ यूनानी प्रतियों में "शुरू से" है।

The Obligation to Work

6 Brothers and sisters, by the authority of our
Lord Jesus Christ we tell you to stay away from
any believer who refuses to work. People who
refuse to work are not following the teaching
that we gave them. 7 You yourselves know that
you should live like we do. We were not lazy
when we were with you. 8 We never accepted
food from anyone without paying for it. We
worked and worked so that we would not be a
burden to any of you. We worked night and day.
9 We had the right to ask you to help us. But we
worked to take care of ourselves so that we would
be an example for you to follow. 10 When we
were with you, we gave you this rule: "Whoever
will not work should not be allowed to eat."

11 We hear that some people in your group
refuse to work. They are doing nothing except
being busy in the lives of others. 12 Our
instruction to them is to stop bothering others,
to start working and earn their own food. It is by
the authority of the Lord Jesus Christ that we are
urging them to do this. 13 Brothers and sisters,
never get tired of doing good.

14 If there are some there who refuse to do
what we tell you in this letter, remember who
they are. Don't associate with them. Then
maybe they will feel ashamed. 15 But don't treat
them as enemies. Counsel them as fellow
believers.

Final Words

16 We pray that the Lord of peace will give you
peace at all times and in every way. The Lord be
with you all.

17 Here's my greeting in my own
handwriting—Paul. I do this in all my letters to
show they are from me. This is the way I write.

18 The grace of our Lord Jesus Christ be with
you all.

कर्म की अनिवार्यता

6भाईयों, अब तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के
नाम में यह आदेश है कि तुम हर उस भाई से दूर
रहो जो ऐसा जीवन जीता है जो उसके लिए उचित
नहीं है। 7मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि तुम
तो स्वयं ही जानते हो कि तुम्हें हमारा अनुकरण
कैसे करना चाहिए क्योंकि तुम्हारे बीच रहते हुए
हम कभी आलसी नहीं रहे। 8हमने बिना मूल्य
चुकाए किसी से भोजन ग्रहण नहीं किया, बल्कि
जतन और परिश्रम करते हुए हम दिन रात काम में
जुटे रहे ताकि तुममें से किसी पर भी बोझ न पड़े।
9ऐसा नहीं कि हमें तुमसे सहायता लेने का कोई
अधिकार नहीं है, बल्कि हम इसलिए कड़ी मेहनत
करते रहे ताकि तुम उसका अनुसरण कर सको।
10इसलिए हम जब तुम्हारे साथ थे, हमने तुम्हें यह
आदेश दिया था: "यदि कोई काम न करना चाहे तो
वह खाना भी न खाए।"

11हमें ऐसा बताया गया है कि तुम्हारे बीच कुछ
ऐसे भी हैं जो ऐसा जीवन जीते हैं जो उनके अनुकूल
नहीं हैं। वे कोई काम नहीं करते, दूसरों की बातों में
टाँग अड़ाते हुए इधर-उधर घूमते फिरते हैं। 12ऐसे
लोगों को हम यीशु मसीह के नाम पर समझाते हुए
आदेश देते हैं कि वे शांति के साथ अपना काम करें
और अपनी कमाई का ही खाना खायें। 13किन्तु हे
भाईयों, जहाँ तक तुम्हारी बात है, भलाई करते हुए
कभी थको मत। 14इस पत्र के माध्यम से दिए गए
हमारे आदेशों पर यदि कोई न चले तो उस व्यक्ति पर
नजर रखो और उसकी संगत से दूर रहो ताकि उसे
लज्जा आए। 15किन्तु उसके साथ शत्रु जैसा व्यवहार
मत करो बल्कि भाई के समान उसे चेताओ।

पत्र का समापन

16अब शांति का प्रभु स्वयं तुम्हें हर समय,
हर प्रकार से शांति दे। प्रभु तुम सब के साथ
रहे।

17मैं पौलुस स्वयं अपनी लिखावट में यह नमस्कार
लिख रहा हूँ। मैं इसी प्रकार हर पत्र पर हस्ताक्षर
करता हूँ। मेरे लिखने की शैली यही है।

18हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब
पर बना रहे।